महापच्चक्खाण पइण्णयं (फोल्डर नं. ११४०)

मुख्य टाइटल
प्रकाशकीय
स्व. श्री फतहलाल जी सा. हिंगर-उदयपुर – एक परिचय
विषयानुक्रम
भूमिका---१-५६
महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक --१
मंगल और अभिधेय – १-२ ---३
विविध प्रत्याख्यान – ३-५---३
सर्व जीव क्षमापना – ६-७---३
निन्दा, गर्हा और आलोचना – ८--५
ममत्व छेदन और आत्म-धर्म स्वरूप – ९-११ ---५
मूलगुण, उत्तरगुण की आराधना पूर्वक आत्मनिंदा – १२ ---५
एकत्व भावना – १३-१६ ---५-७
संयोग सम्बन्ध परित्याग – १७ ---७
असंयम आदि की निन्दा और मिथ्यात्व का त्याग – १८-१९ ---७
अज्ञात अपराध आलोचना – २० ---७
माया निहनन उपदेश – २१ --७
आलोचक का स्वरूप और मोक्षगामित्व – २२-२३ ---९
शल्योद्धरण प्ररूपणा – २४-२९---९
आलोचना फल – ३० ---९
प्रायश्चित अनुसरण प्ररूपणा – ३१-३२-- ११
प्राण-हिंसा आदि का प्रत्याख्यान और असण आदि का परित्याग – ३३-३४ ----------------------------- ११
निर्दोष पालन, भाव शुद्ध और प्रत्याख्यान स्वरूप – ३५-३६--- ११
वैराग्य उपदेश – ३७-४० -- ११-१३
पंडितमरण प्ररूपणा – ४१-५० --- १३
निर्वेद उपदेश – ५१-६७ --- १३-१७
पंच महाव्रत रक्षा प्ररूपणा – ६८-७६-- १७-१९
गुप्ति समिति प्रधान प्ररूपणा – ७७-- १९
तप माहात्म्य – ७८-७९-- १९
आत्मार्ध साधन प्ररुपणा – ८०-८४---२१
अकृत योग और कृत योग के गुणदोष की प्ररूपणा – ८५-८९ --२१
पंडितमरण प्ररूपणा – ९०-९२--२३
अनआराधक स्वरूप – ९३-९४--२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आराधन माहात्म्य – ९५ ---------- २३
विशुद्ध मन प्राधान्य – ९६ ---------- २३
प्रमाद दोष प्ररूपणा – ९७-९८ ---------- २३-२५
संवर माहात्म्य – ९९-१०० ---------- २५
ज्ञान-प्राधान्य प्ररूपणा – १०१-१०६ ---------- २५-२७
जिनधर्म में श्रद्धा – १०७ ---------- २७
विविध त्याग प्ररूपणा – १०८-११० ---------- २७
प्रत्याख्यान से समाधि प्राप्ति – १११-११२ ---------- २७
अरंहत आदि एक पद के शरण ग्रहण एवं प्रत्याख्यान करने से आराधकत्व – ११३-१२० ---------- २७-२९
वेदना सहन का उपदेश – १२१-१२५ ---------- २९
अभ्युद्यतमरण प्ररूपणा – १२६-१२७ ---------- ३१
आराधना पताका प्राप्ति प्ररूपणा – १२८-१३४ ---------- ३१
संसारतन और कर्म निस्तारण उपदेश – १३५-१३६ ---------- ३३
आराधना के भेद और उसके फल – १३७-१३९ ---------- ३३
सर्व जीव क्षमापना – १४० ---------- ३३
धीरमरण प्रशंसा – १४१ ---------- ३३
प्रत्याख्यान पालन का फल – १४२ ---------- ३३
परिशिष्ट
(१) महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक में प्रयुक्त विशिष्ट शब्द ---------- ३४-४२
(२) महाप्रत्याख्यान प्रकीर्णक की गाथानुक्रमणिका ---------- ४३-४५
(३) सहायक ग्रन्थ सूची ---------- ४६-४७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org